पुरुष तन में बँधे नारी मन की पीड़ा

(किन्नर विमर्श)

लेखन एवं संपादन

डॉ. यशोदा मेहरा

मनीष पब्लिकेशन्स

दिल्ली-110090

ISBN : 978-93-91515-49-2

© : डॉ. यशोदा मेहरा

प्रकाशक : मनीष पब्लिकेशन्स
471/10, ए-ब्लॉक, पार्ट-द्वितीय,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. नं. 09968762953
email : manishpublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 500/-

शब्द संयोजक : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, जगतपुरी, दिल्ली-110093

Purush Tan Mein Bandhe Nari Mann Ki Peeda
Edited by Dr. Yashoda Mehra

14. पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा : एक चिंतन 109
शरद त्र्यंबक डुमणे
15. एक दुनिया अजनबी–डॉ. प्रणव भारती (उपन्यास) 116
चौधरी बबीता जगदीश प्रसाद
16. 'मैं पायल.....' 122
अश्विनी शेषराव राऊत
17. तीसरे वर्ग की यथार्थ प्रतिनिधि 'बिंदा महाराज' कहानी 129
डॉ. आदर्श किशोर
18. सभ्य समाज को कुरेदती - इज्जत के रहबर 135
डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री
19. किन्नर और समाज : 'इज्जत के रहबर' डॉ. पद्मा शर्मा की कहानी के संदर्भ में 141
कुलदीप प्रजापति
20. हिन्दी सिनेमा और थर्ड जेंडर का जीवन यथार्थ 147
डॉ. प्रणु शुक्ला

18

सभ्य समाज को कुरेदती - इज्जत के रहबर

डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री
सहा. प्राध्यापक, हिन्दी
राजीव गाँधी शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अंबिकापुर, जिला-सरगुजा, छत्तीसगढ़

साहित्य युगानुरूप चलता है। वह अपने युग की विशेषताएं लिए हुए रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि साहित्य अपने समय और समाज की परिस्थितियों, विसंगतियों, आसपास के वातावरण,आचार-विचार, व्यवहार आदि के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। समाज की परिस्थितियां बदलती रहती हैं। इन बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप ही हिन्दी साहित्य में विमर्शों के दौर आते रहे हैं। स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श आदि से हिन्दी साहित्य भरा पडा है। साहित्यकार सदैव अपने दायित्व के प्रति सजग रहते हुए समाज के पीड़ित, शोषित, उपेक्षित वर्ग के साथ खड़ा रहता है। ऐसा ही हमारे तथाकथित सभ्य समाज द्वारा विस्थापना का दंश झेलता हुआ एक पीड़ित वर्ग है 'किन्नर'। जो प्राचीन काल से ही समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं संकीर्णतामूलक सोच के कारण पीड़ित है। उनका जीवन तथाकथित सभ्य समाज द्वारा दुत्कारा हुआ, त्रासदपूर्ण है। किन्नर को भले ही सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के अनुसार सम्मान देते हुए तृतीय लिंगी कहा जाने लगा किन्तु क्या संज्ञा बदल देने मात्र से उनके पीड़ा और संत्रास से भरे जीवन में बदलाव आ गया? "अपवादस्वरूप यत्र-तत्र तृतीय लिंगी शिक्षित मिल जाते हैं। कुछ आध्यात्मिक ज्ञान के साथ संगीत और नृत्य शास्त्र का भी अध्ययन किये हैं। राजनीति के क्षेत्र में भी कुछ किन्नरों ने अपना वर्चस्व स्थापित किया है। जिनमें शबनम मौसी, कमला जान, कमला किन्नर और मधु किन्नर आदि प्रमुख हैं। देश की पहली किन्नर शिक्षाविद प्राचार्य मानोबी बंद्योपाध्याय(पश्चिम बंगाल) और पहली किन्नर वकील तमिलनाडू की सत्या श्रीशर्मिला ने सिद्ध कर दिया कि किन्नर अथवा 'थर्ड जेंडर'

किसी भी विद्वत स्त्री पुरुष की भांति बुद्धिजीवी वर्ग के समकक्ष अपनी प्रतिभा प्रदर्शित कर सकते हैं। अस्मिता की यह लड़ाई किन्नरों द्वारा लड़ी जा रही है।"[1] भारतीय समाज की रुढ़िवादी विचारधारा एवं मान्यताओं के कारण आज भी किन्नर मुख्यधारा से पृथक होकर उपेक्षित जीवन जीने हेतु विवश हैं। उन्हें अपने जन्म देने वाले परिवार में रहने का अधिकार नहीं होता है।वे अलग समुदाय बनाकर रहते हैं। उन्हें शिक्षा व रोजगार जैसे मानवीय अधिकारों से वंचित रखा जाता है जिसके कारण उन्हें तीज-त्योहारों, जन्म, विवाह आदि के अवसर पर बधाई गीत, मांगलिक गीत- नृत्यगान करके तथा चौक-चौराहों पर वाहनों में अपनी जीविका के लिए धन मांगने हेतु विवश होना पड़ता है। डॉ. एम.फिरोज खान अपनी पुस्तक थर्ड जेंडरःकथा आलोचना में कहते हैं कि "पितृ सत्तात्मक समाज में पुरुषों का ही वर्चस्व रहता है। तृतीय लिंग के व्यक्तियों को समाज में अधिकारों से हीन कर उन्हें कमजोर बनाकर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। परिवार, रिश्ते, शिक्षा, रोजगार, आवास सुविधाएँ आदि के अधिकार इनके लिए बेमानी हो जाते हैं। इन सबके अभाव में ये नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाते हैं। किन्नरों की सामाजिक बहिष्कृति एक खास तरह की मनोवृत्ति के कारण होती है जिसे 'ट्रांस्फोबिया' कहा जाता है। तीसरे लिंग के प्रति भय, लज्जा, क्रोध, हिंसा, पूर्वाग्रह, भेदभाव आदि नकारात्मक भावों के सम्मिश्रण से बना यह 'ट्रांस्फोबिया' तीसरे लिंग के जीवन को नरक बना देता है।[2]

पद्मा शर्मा कृत कहानी 'इज्जत के रहबर' इन्हीं किन्नर जीवन की करुण कथा है।यह कई बड़े सन्दर्भों को एक साथ लेकर चलने वाली कहानी है। इसमें तृतीय लिंगी जीवन के नकारात्मक पहलुओं का नग्न यथार्थ जैसे- नशे की लत, अश्लीलता भरी जीवन शैली,अतृप्त वासना आदि को उद्घाटित करने के साथ-साथ उनकी भावना, संवेदना,उनकी समाजवादी सोच एवं अन्य मानवीय मूल्य जैसे सकारात्मक पक्षों के सजीव दृश्य अंकित हैं। कहानी का प्रारंभ किसी वारदात की पड़ताल से होता है जिसमें पुलिस के जासूस लगातार कुछ तलाश रहे हैं परन्तु उन्हें कोई सूत्र हासिल नहीं होता है।कहानी का पात्र बल्लू चकित था। वह अतीत की स्मृति में चला जाता है। श्रीलाल के छोटे भाई का विवाह हुआ था। घर में खुशी का माहौल था, बधाई के गीत गाये जा रहे थे। किन्नर सोफिया की टोली पूरे साज शृंगार के साथ वहां पहुँचती है और तालियाँ पीटती हुई नेग मांगती है। "हाय... हाय...हाय...अच्छे खाते पीते हो ...तुम लोग इतना नहीं दोगे तो गरीब बेचारा क्या देगा ....हाय....हाय...हाय...हमारा पेट कैसे चलेगा।"[3] इतना ही नहीं आजीविका प्राप्त करने हेतु उन्हें कई बार अश्लील प्रदर्शन भी करना पड़ता है। सोफिया पेट पर पड़े पल्ले को झटके से हटाकर इस अदा से अपना पेट दिखाती है कि उसके गोरे गुदाज पेट के साथ-साथ बदन का ऊपरी

हिस्सा भी दिख गया। बल्लू को जरा भी हैरत नहीं हुई। अनाथ किशोर बल्लू उन्हीं के बीच पला बढ़ा है। उसके माध्यम से किन्नरों के अन्तरंग जीवन की विद्रुपताओं को उद्घाटित किया गया है। वहां खड़े सभ्य समाज के पुरुष एक दूसरे को अश्लील इशारा करके हंस दिए। बल्लू सोच रहा था -.....होली हो या दिवाली सब त्योहारों पर सोफिया बस्ती के सब घरों में शगुन लेती है, शादी व्याह हो या बच्चे का जनम,सबके लिए उनके अलग-अलग रेट चलते हैं।.....बाजार में दुकान वालों से भी खूब रुपये लेती हैं। उन्हें रिझाती हैं पटाती हैं, उनकी फरमाइश पर नए- नए गानों पर एक अलग तरह से कदमताल के ठुमके लगाती हैं। टी. वी. देख-देखकर हीरोइनों जैसा नाचने की कोशिश भी करती हैं। अब तो रेल में भी ये लोग सवारियों से पैसों के लिए जिरह करने लगी हैं।"[4] सामाजिक बहिष्कार के कारण विस्थापन व शिक्षा के आभाव से किन्नरों में रोजगार की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे उन्हें इस तरह के नारकीय जीवन जीने हेतु विवश होना पड़ता है।

किन्नर न तो पूर्णतः स्त्री होते हैं और न ही पूर्णतः पुरुष परन्तु मानव होने के कारण उनमें भी समस्त मानवीय इच्छाएं प्राकृतिक रूप से विद्यमान रहती हैं। प्रेम और आकांक्षा की चाहत मानवीय प्रवृत्ति है। ये प्रवृत्तियां इनमें विकृत रूप धारण कर लेती हैं। आलोच्य कहानी में किन्नर झूठी मादकता व उत्तेजना पैदा करने की कोशिश करती थीं। फ्रायड के मतानुसार मनुष्य की मनोविकृतियाँ दमन का परिणाम होती हैं। 'इज्जत के रहबर' कहानी में किन्नरों में समलैंगिकता की प्रवृत्ति का भी चित्रण किया गया है। किन्नरों के यौन प्रवृत्ति के सम्बन्ध सामान्य स्त्री-पुरुष से भी होते हैं। "रात में बल्लू दालान में सोता था पहले वह सब लोगों के साथ भीतर हाल में सोता था, सभी लोग उसे अपने पास लिटाने को आतुर रहती थीं। शुरू में तो वह समझता था कि सब उसे बच्चे की तरह बेहद प्यार करती हैं। लेकिन धीरे-धीरे उसे महसूस होने लगा कि रात में नींद का बहाना बनाकर कोई उस पर अपना पैर रखकर सीने में सटाकर सो जाती। कभी रात में बल्लू के शरीर पर किसी का हाथ रेंगने लगता। उनके हाथों का स्पर्श उसे अच्छा लगता और वह बेहद उत्तेजित हो अंततः स्खलित हो जाता। एक अलग होती तो दूसरी पास सरक आती। एक रात जब एक के बाद एक चार लोगों ने उसे परेशान किया तो वह चीख उठा।"[5] सोफिया ने उसे दालान में सुलाना आरम्भ कर दिया। वह दालान में सोता लेकिन उसे रात्रि में अब भी कमरे से सिसकियाँ और लम्बी सांसों की आवाजें सुनाई देती रहती। "इनमें नशे की लत भी थी। कोई-कोई बीडी, सिगरेट पीती .....कोई तम्बाकू खाती थीं। कोई शराब की चुस्कियों की शौक़ीन हैं तो कोई अफीम की पीनक लगाये पड़ी रहती हैं।"[6]

पद्मा शर्मा द्वारा अपनी कहानी 'इज्जत के रहबर' में जहाँ एक तरफ किन्नर

जीवन में व्याप्त विडम्बनाओं व विकृतियों को विवेचित, विश्लेषित किया गया है वहीं दूसरी तरफ उनके भेदभाव रहित सोच,भावना, सम्वेदना जैसे सकारात्मक पहलुओं को भी बखूबी उभारा गया है। सम्पूर्ण भारतीय समाज धार्मिक उन्माद, साम्प्रदायिकता, विभिन्न प्रकार के भेदभाव से ग्रसित रहता है परन्तु जब संकट अस्तित्व व आजीविका का हो तब इस तरह की संकीर्णताएँ घर नहीं कर पाती हैं। किन्नर समुदाय की इसी विशेषता का चित्रण इस कहानी में किया गया है। यहाँ धर्म- जाति आदि मायने नहीं रखता। इस समुदाय में जरुरी नहीं कि जो जिस समुदाय से आया है उसी समुदाय से सम्बंधित नाम रखे जाएँ। इस खेमे में आकर नए नाम पा लेने से इनका भूतकाल समाप्त हो जाता है। "बल्लू आज तक नहीं समझ पाया कि इनमें से कौन किस कौम की है? उनके नाम भी अजीब होते हैं.....सलमा बी, बड़ी बी, जगीर, सुनयना आदि। सांप्रदायिक सद्भाव की अनोखी मिसाल थी इनकी टोली में। हिन्दू के मुस्लिम नाम और मुस्लिम के हिन्दू नाम रखे जाते थे इनकी टोली में।"[7]

किन्नरों की संवेदनशीलता और सामाजिकता की भावना को इस कहानी में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह समुदाय जहाँ एक ओर विवाह में नेग लेने हेतु अश्लीलता के हद तक पहुँच जाता है वहीं श्रीलाल के यह कहने पर कि तुम्हें लड़की वालों से नेग दिला देंगे सोफिया खीझती हुई कहती है—"हमारे भी कुछ उसूल हैं लालाजी। लड़की की शादी में लड़की वालों से शगुन नहीं लेते, लड़के वालों से लेते हैं।.....और जिसके यहाँ गमी हो जाती है उसके यहाँ से सालभर तक नेग-दस्तूर नहीं लेते।.....पहली लड़की पैदा होने पर नेग लेते हैं।.....दूसरी लड़की होने पर जिद नहीं करते।....गरीबों को कम पैसों में बख्श देते हैं। बल्लू सोफिया को गुस्से में देखकर वह निर्णय नहीं ले पा रहा था कि ये उसका असली रूप है या वो असली रूप था जो कारगिल युद्ध के समय फौजियों के वास्ते दान देने के लिए कलेक्टर को सबसे पहले पांच हजार का चेक देते वक्त दिखा था .....और उस दिन सड़क पर खून से लथपथ व्यक्ति को जब कोई नहीं उठा रहा था तो सोफिया ही थी जो उसे अस्पताल पहुंचा आई थी। डॉक्टर से उसने कहा था कि खून कि जरूरत हो तो हमारा ले लो..... ।"[8]

इस कहानी में किन्नरों के प्रति भारतीय समाज की रुढ़िवादी सोच के विपरीत उनमें न्याय की भावना, साहस एवं समाज को अपराध से मुक्त करने का जज्बा भी दिखाई देता है। देश में प्रतिदिन हजारों बलात्कार की घटनाएँ होती हैं। स्त्री केवल देह बनकर रह गयी है। निर्भया जैसे कितने जघन्य और घिनौने अपराध आये दिन होते हैं। ऐसे कितने ही मामले अदालत में लम्बित पड़े हैं। इतना ही नहीं ऐसे हजारों मामले हैं जो अदालत में पहुँचने से पहले ही दम तोड़ देते हैं। यदि पुलिस और अदालत

तक मामला पहुँच भी गया तो चिकित्सा जाँच से लेकर पुलिस व अदालत के अश्लील प्रश्नों तक की लम्बी प्रक्रिया ऐसी कि जैसे बलात्कार बार-बार हो रहा हो। शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना स्त्री कैसे सहती है? इसे कौन समझ सकता है। समाज में यह भय भी व्याप्त है कि लड़की का बलात्कार हुआ है यह समाज को पता चल जायेगा तो उनकी क्या इज्जत रह जाएगी? इस वजह से लड़की को ही चुप करा दिया जाता है। यही कारण है कि बलात्कारियों के हौंसले बढ़ जाते हैं और लड़कियाँ शोषण की शिकार होती रहती हैं। कई बार तो लड़कियां घुटते-घुटते आत्महत्या तक कर लेती हैं किन्तु भीरु समाज पर इसका कोई असर नहीं होता। इस कहानी में श्रीलाल की बेटी प्रतिभा का गुंडे छिंगा द्वारा बलात्कार किया जाता है। प्रतिभा के पिता समाज में बदनामी होने के भय से पुलिस में शिकायत दर्ज नहीं करते हैं। सोफिया रिपोर्ट लिखाने के लिए जोर देती है और कहती है कि जरूरत पड़ी तो बल्लू गवाही देगा परन्तु श्रीलाल इसके लिए तैयार नहीं होते हैं। सोफिया उलाहना देने के स्वर में बोली ....''तुमलोग औरतों को आगे बढ़ाने की बातें बड़ी-बड़ी तो करते हो। लेकिन जब कुछ करने की बारी आती है तो पीछे हट जाते हो। सच्ची बात तो ये है कि आज भी तुम्हारी मानसिकता बदली नहीं है।[9] जिनकी स्वयं की जिंदगी त्रासदी से भरी है वही किन्नर बलात्कार जैसे जघन्य अपराध के विरुद्ध साहस और दिलेरी के साथ गुंडे को नपुंसक बनाकर सजा देते हैं, ऐसे जघन्य मामले में जहाँ तथाकथित सभ्य समाज चुप्पी साध लेता है। श्रीलाल ने संदेह भरी दृष्टि से पूछा कि सब लोगों को शक है कि तुम लोग बिरादरी में अपनी संख्या बढ़ाने के लिए लोगों के अंग-भंग कर रही हो? तब सोफिया का जवाब इज्जत की दुहाई देने वाले समाज को झकझोर देने वाला है। वह कहती है—"नहीं लालाजी हमारी संख्या तो ईश्वर बढ़ाता है। खुदा ना करे वह और अधिक संख्या बढ़ाये। हमें कितना कष्ट है इस योनि में होने का ये तो हम ही जानती हैं। हाँ, हमें उस चीज पर बड़ा गुस्सा जरुर है जिसके होने पर ये नाशपीटे दम भरते हैं और बहु- बेटियों की इज्जत से खेलते हैं।"[10] वह आगे कहती है—"हाँ, यही सच है कि काम हमने किया है लेकिन अपनी संख्या बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि तुम जैसे भीरु लोगों में चेतना जगाने के लिए। जिस दिन बलात्कारियों को ये सजा मिलने लग जाएगी, उस दिन से कोई भी गुंडा औरतों की इज्जत लूटने की हिम्मत नहीं कर सकेगा।"[11] वह समाज की विकृत सोच, भ्रष्टाचार और न्यायिक प्रक्रिया पर भी सवाल उठाती है—"मां-बाप इज्जत के डर से रिपोर्ट लिखाते नहीं। यदि रिपोर्ट लिखा भी दें ....तो केस साबित नहीं हो पाता। मुलजिम रुपयों की भरमार से सबूत के बिना केस रफा-दफा हो जाता है। वैसे आखिर में जुर्म साबित हो भी जाये तो कितने साल की सजा होगी? .....पांच साल .....सात साल ...बस।.....ऐसी सजा

मिले जो हमने दी है, तो कोई बहु-बेटियों की तरफ आँख उठाने की हिम्मत न करे।[12] सोफिया की बातें सुनकर बल्लू के मन में कभी-कभी उन लोगों के प्रति आ जाने वाले क्रोध, नफरत, उपेक्षा के भाव समाप्त हो गये। उसे लग रहा था कि संवेदना और विरोध की हिम्मत तो उन लोगों में है जो अधूरे कहे जाते हैं और दूसरों पर आश्रित रहते हैं। संवेदना श्रीलाल जैसों में कहाँ है। इज्जत से तो यह लोग जीते हैं। समाज में रहने वाले गृहस्थों की इज्जत तो मौके-बेमौके उधड़ती रहती है, उतरती रहती है। इज्जत के रहनुमा कहे जाने वाले दरअसल गुंडों से डरते हैं और अनजाने में रहबर बन जाते हैं, जिसका अंजाम भुगतती हैं उनके घर की बहन- बेटियां। इज्जत के रहबर तो समाज द्वारा उपेक्षित, तिरस्कृत, प्रताड़ित, विस्थापित ये किन्नर हैं। जो बलात्कारी गुंडे को सजा देकर समाज के समक्ष रहबरी की मिसाल प्रस्तुत करते हैं।

'इज्जत के रहबर' कई सन्दर्भों और उद्देश्यों को एक साथ लेकर चलने वाली बड़ी कहानी है। इसमें किन्नर वर्ग की पीड़ा, संत्रास, उनकी संवेदनाओं का चित्रण तो है ही, पितृसत्तात्मक समाज की स्त्री के प्रति संकीर्ण सोच को भी बड़े ही सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आलोच्य कहानी में यह भी सिद्ध होता है कि भावना, संवेदना, मानवीय व नैतिक मूल्य जैसे उत्कृष्ट भावों के लिए लैंगिक भेद आड़े नहीं आता। इस कहानी में किन्नर के जीवन में व्याप्त समस्याओं, निराशा, कुंठा, तिरस्कार, एकाकीपन एवं उनके जीवन शैली का चित्रण किया गया है जिसका उद्देश्य समाज में उनके प्रति मानवता का सन्देश पहुँचाना है।

सन्दर्भ सूची

1. Sahtyakiunj.net@hindi-katha-sahity-mein-kinnar-swar
2. खान, डॉ. एम. फिरोज-थर्ड जेंडर : कथा आलोचना, अनुसन्धान पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण-2017, कानपुर, पृष्ठ-52
3. शर्मा, पद्मा, इज्जत के रहबर, बोधि प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण-2022, पृष्ठ-90
4. वही, पृष्ठ-91
5. वही, पृष्ठ-93
6. वही, पृष्ठ-93
7. वही, पृष्ठ-92
8. वही, पृष्ठ-95
9. वही, पृष्ठ-98
10. वही, पृष्ठ-99
11. वही, पृष्ठ-99
12. वही, पृष्ठ-100